Gupta period (Part -22)

हूणों का आक्रमण।

- हूणों ने कुमारगुप्त महेन्द्रादित्य की मृत्यु के पश्चात् गुप्त साम्राज्य के ऊपर आक्रमण कर दिया. ये मूल रूप से मध्य एशिया के निवासी थे. ये बड़े ही आततायी और क्रूर थे.

स्कंदगुप्त के पहले इन लोगों ने डेन्यूब नदी से लेकर सिन्धु नदी तक आतंक मचा रखा था. हूणों की दो शाखाएँ थी - पश्चिमी और पूर्वी शाखा. पश्चिमी शाखा ने जहाँ रोमन साम्राज्य पर आक्रमण कर उसे तहस-नहस कर दिया था. वहीं पूर्वी शाखा के हूणों ने भारतीय महाद्वीप पर आक्रमण किया. जूनागढ़ के लेख में हूणों को म्लेच्छ कहा गया है. हूणों का उल्लेख महाभारत, कालीदास के रघुवंश, हर्षचरित, सोमदेव कृत नीतिवाक्यामृत, ललित विस्तार इत्यादि में मिलता है. विशाखदत्त के मुद्रा राक्षस के "भरत वाक्य" तथा पुराणों में हूणों को म्लेच्छ कहा गया है.

- प्रसिद्ध चीनी यात्री सुंग-युन जिसने कि, 515-20 A.D. के बीच भारत की यात्रा की, ने हूणों के बारे में लिखा है - इनका वंश दो पीढ़ियों से गांधार पर शासन कर रहा है. सुंग-युन के अनुसार, हूणों का पहला शासक 'तिगीन' था. जिसने गांधार पर अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित की थी. जबकि "तोरमाण" हूणों का पहला ऐसा शासक था. जो भारत के मध्यवर्ती भागों तक आ गया था.

नोट :- धान्यविष्णु के एरण मालवा अभिलेख में भी तोरमाण का उल्लेख मिलता है. उद्योतन सूरी नामक प्रसिद्ध जैन विद्वान के ग्रंथ 'कुवलयमाला' में तोरमाण शासक का उल्लेख मिलता है. जिसका शासन चंद्रभागा (चिनाब नदी) के तट पर 'पवैया' नामक स्थान पर शासन करने का उल्लेख है.

तोरमाण का पुत्र मिहिरकुल एक कट्टर शैव शासक था. उसने बौद्ध धर्म पर काफी जुल्म भी किये थे. वास्तव में

गुप्त साम्राज्य को इसी ने ज्यादा नुकसान पहुँचाया था।
मिहिरकुल को मालवा के शासक यशोवर्मन ने 532 A.D. के आसपास पराजित किया था। इस बात की जानकारी उसके मंदसौर अभिलेख से होती है। हवेनसांग के अनुसार, मगध के शासक नरसिंह गुप्त बालादित्य ने मिहिरकुल को पराजित करने में सफलता हासिल की थी।

= स्कंदगुप्त के शासनकाल में हूणों का आक्रमण हुआ तो अवश्य था। इसके भितरी स्तंभ लेख में हूणों के साथ स्कंदगुप्त के युद्ध का स्पष्ट विवरण मिलता है। परन्तु यह war किस स्थान पर हुआ था। इसकी स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती। इतना तो स्पष्ट है कि हूणों को स्कंदगुप्त ने अपने साम्राज्य से बाहर खदेड़ दिया था। स्कंदगुप्त ने हूणों से सुरक्षा के निमित्त अपने सौराष्ट्र प्रांत के मौर्य स्थलों पर रक्षकों को नियुक्ति की।

धार्मिक विवेचन – स्कंदगुप्त ने भी धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनायी थी। वह व्यक्तिगत रूप से वैष्णव मतावलंबी था। उसकी उपाधि 'परमभागवत' थी। स्कंदगुप्त के जिनार अभिलेख के अनुसार, यहाँ का नगराध्यक्ष 'चक्रपालित भी इसी धर्म को मानता था।
स्कंदगुप्त के समय में सूर्य की भी पूजा होती थी। उसके 'इंदौर' लेख के अनुसार, इंद्रपुर (आधुनिक इंदौर में एक सूर्य मंदिर था। उसका नाम 'कार्तिकेय (स्कंद) से सम्बन्धित है। इसकी रजत मुद्राओं पर 'मयूर' का चिन्ह अंकित है। जो कि कार्तिकेय का वाहन है। इस देवता का विशेष रूप 'सेनापतित्व' है और यही स्कंदगुप्त के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता है।

स्कंदगुप्त की मृत्यु के उपरांत शासक कौन, इस सम्बन्ध में काफी विवाद बना हुआ है। संभवतः उसके

बाद पुरुगुप्त, नरसिंह गुप्त बालादित्य, कुमार गुप्त - और बुद्धगुप्त जैसे शासक ने क्रमशः शासन किया।

- कुमारगुप्त-II के काल की सारनाथ अभिलेख काफी महत्वपूर्ण है। जो कि बुद्ध प्रतिमा पर उत्कीर्ण है। यह प्रथम गुप्त नरेश है जिसके समय का लेख सारनाथ से प्राप्त है।

- गुप्त वंश का अंतीम शासक विष्णुगुप्त थे।